पाठ 12 कबीर की वाणी

श्रुतलेखन शब्द (15)

ऋतु	गुरु	गोबिंद	वाणी
शीतल	कुटुंब	तिनका	पाँव
झूठ	पाप	सत्य	महिमा
माली	साईं	दोहे	

उ. छात्र स्वयं करें।

CH- 12

2. **बताइए**

क. कौन-सा दोहा समय का महत्व बताता है?

उ. छठा दोहा—'काल करे....' समय का महत्व बताता है।

ख. वाणी कैसी होनी चाहिए?

उ. वाणी मधुर होनी चाहिए।

ग. किसी की निंदा क्यों नहीं करनी चाहिए?

उ. किसी की निंदा इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि बुराई खुद हमारे अंदर भी होती है।

घ. ईश्वर और गुरु में से कौन सर्वप्रथम प्रणाम के अधिकारी हैं और क्यों?

उ. गुरु सर्वप्रथम प्रणाम के अधिकारी हैं क्योंकि वे ही हमें ईश्वर के बारे में बताते हैं।

ङ: आपको कौन-सा दोहा सबसे अच्छा लगा और क्यों?

उ. मुझे पाँचवाँ दोहा सबसे अच्छा लगा क्योंकि इसमें मधुरवाणी का महत्व बताया गया है। अपनी मीठी बोली से हम दूसरों को अपना बना सकते हैं। (उदाहरण के अनुसार छात्र अपने-अपने विचार रखें।)

लिखिए

1. **सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए—**

क. सबसे बड़ा तप किसे माना गया है?

✓ सच्चाई को

ख. साईं इतना दीजिए... दोहे में कौन-सी सीख दी गई है?

✓ संतोष की

2. **पंक्तियाँ पूरी कीजिए—**

क. बुरा जो देखन मैं चला, ···बुरा न मिलया कोय।···

···जो मन खोजा आपना···, मुझसे बुरा न कोय॥

ख. ···साईं इतना दीजिए···, जामे कुटुंब समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, ···साधु न भूखा जाय॥···

3. **कुछ शब्दों में उत्तर लिखिए—**

क. सबसे बड़ा पाप क्या है?

उ. ···झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है।···

ख. कवि को सबसे ज्यादा बुराई कहाँ मिली?

उ. ···कवि को सबसे ज्यादा बुराई अपने मन में मिली।···

ग. माली को मेहनत का फल कब मिलता है?

उ. ···माली को मेहनत का फल तभी मिलता है जब फल होने का समय आता है।···

घ. हमें आज का काम कब करना चाहिए?

उ. ···हमें आज का काम अभी करना चाहिए।···

4. **कुछ वाक्यों में उत्तर लिखिए—**

क. तिनके के माध्यम से कबीरदास जी क्या कहना चाहते हैं?

उ. तिनके के माध्यम से कबीरदास जी कहना चाहते हैं कि किसी को भी छोटा या तुच्छ नहीं समझना चाहिए क्योंकि कभी-कभी छोटे वो काम कर जाते हैं जो बड़े नहीं कर पाते हैं।

ख. कवि स्वयं को बुरा बताकर क्या सीख देना चाहते हैं?

उ. कवि स्वयं को बुरा बताकर यह सीख देना चाहते हैं कि प्रत्येक इंसान के अंदर कुछ-न-कुछ बुराइयाँ होती है इसलिए हमें दूसरों की बुराई न देखकर अपनी बुराइयाँ पहचानकर उन्हें दूर करना चाहिए।

ग. कवि ईश्वर से कितना देने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं? इससे उनके किस गुण का पता चल रहा है?

उ. कवि ईश्वर से केवल इतना देने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जिससे उनके परिवार का भरण-पोषण हो जाए और घर आया मेहमान भी भूखा न रहे।

घ. किन पंक्तियों द्वारा कवि धैर्य धारण करने के लिए कह रहे हैं?

उ. तीसरे दोहे—'धीरे-धीरे...' में कवि धैर्य धारण करने के लिए कह रहे हैं।

समझिए व्याकरण संबोध

1. **निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए—**

साँच — ...सच...
काके — ...किसके...
हिरदे — ...हृदय...
घनेरी — ...बहुत...
मनां — ...मन...
परलय — ...प्रलय...

2. **इन शब्दों के समानार्थक शब्द दोहों में से ढूँढ़कर लिखिए—**

शिक्षक — ...गुरु...
ठंडा — ...शीतल...
नयन — ...आँखन...
ईश्वर — ...गोविंद...
परिवार — ...कुटुंब...
पीड़ा — ...पीर...

3. **नीचे लिखे वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए—**

जो ईश्वर को मानता है — ...आस्तिक...
जो ईश्वर को न माने — ...नास्तिक...
परोपकार करनेवाला — ...परोपकारी...
संतोष रखनेवाला — ...संतोषी...

4. **निम्नलिखित पंक्तियों में सर्वनाम शब्दों पर गोला लगाइए—**

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो मन खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

5. **उचित स्थान पर ँ या ं लगाइए—**

साँच गोविंद कुटुंब पाँव सींचे आँखन